

# मानव वृद्धि एवं विकास

जीवन-काल के चरणों पर विस्तृत PPT



Edit with WPS Office

# परिचय

- • मानव वृद्धि एवं विकास एक सतत प्रक्रिया है।
- • इसमें शारीरिक, संज्ञानात्मक, सामाजिक, भावनात्मक एवं नैतिक विकास शामिल हैं।
- • जीवन-काल को विभिन्न चरणों में विभाजित किया गया है ताकि विकास को समझा जा सके।



# 1. गर्भकालीन अवस्था (Prenatal Stage)

- गर्भाधान से जन्म तक की अवधि।
- तीव्र शारीरिक वृद्धि एवं मस्तिष्क का विकास।
- पोषण, स्वास्थ्य, मातृ-पर्यावरण का गहरा प्रभाव।



## 2. शैशवावस्था (0–2 वर्ष)

- • सबसे तेज शारीरिक वृद्धि।
- • मोटर स्किल्स—बैठना, चलना, पकड़ना।
- • भाषा की शुरुआत—संकेत, ध्वनि, शब्द।
- • भावनात्मक जुड़ाव एवं विश्वास का विकास।



### 3. प्रारम्भिक बाल्यावस्था (2-6 वर्ष)

- स्वतंत्रता में वृद्धि।
- कल्पनाशीलता तथा भाषा विकास।
- सामाजिक नियम सीखना।
- नैतिक मूल्यों का प्रारम्भिक विकास।



## 4. मध्य बाल्यावस्था (6-12 वर्ष)

- • संज्ञानात्मक क्षमताओं में तीव्र विकास।
- • स्कूल अनुभवों का प्रभाव।
- • साथियों के साथ सहयोग एवं प्रतिस्पर्धा सीखना।
- • आत्म-सम्मान का निर्माण।



## 5. किशोरावस्था (12–18 वर्ष)

- • यौवनारंभ से शारीरिक परिवर्तन।
- • पहचान निर्माण (Identity Formation)।
- • भावनात्मक अस्थिरता एवं सामाजिक दबाव।
- • स्वतंत्रता, मित्रता और रुचियों का विकास।



## 6. प्रारम्भिक वयस्क अवस्था (18–40 वर्ष)

- • करियर निर्माण।
- • विवाह एवं पारिवारिक जीवन।
- • शारीरिक क्षमता सर्वोच्च स्तर पर।
- • जिम्मेदारियों में वृद्धि।





## 7. मध्य वयस्क अवस्था (40–60 वर्ष)

- शारीरिक क्षमताओं में हल्की कमी।
- अनुभव, बुद्धिमत्ता और स्थिरता।
- परिवार, करियर एवं समाज में महत्वपूर्ण भूमिका।



## 8. वृद्धावस्था (60+ वर्ष)

- शारीरिक एवं संज्ञानात्मक क्षमताओं में कमी।
- सामाजिक अलगाव की संभावना।
- जीवन-समीक्षा (Life Review)।
- स्वास्थ्य देखभाल की आवश्यकता।



# निष्कर्ष

- मानव विकास एक निरंतर और क्रमिक प्रक्रिया है।
- प्रत्येक चरण की अपनी विशिष्ट आवश्यकताएँ और चुनौतियाँ होती हैं।
- इन्हें समझकर जीवन कौशल, शिक्षा और सामाजिक समर्थन को बेहतर बनाया जा सकता है।

